शांति सुमन : व्यक्ति एवं कृति

❑ दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश'

नवगीत और जनवादी गीत के बड़े रचनाकारों में एक डॉ० शान्ति सुमन का स्थान अपनी समकालीन गीत कवयित्रियों में सर्वोच्च है। नवगीत और जनवादी गीत लिखने में जैसी सफलता शान्ति सुमन को प्राप्त हुई वैसी और किसी गीत कवयित्री को नहीं। कवि सम्मेलनों के माध्यम से लगातार तीस वर्षों तक काव्य-मंचों पर धूम मचाने वाली सुकंठ गीतकार शांति सुमन पूरे देश में अपनी पहचान बना चुकी हैं। समकालीन हिन्दी गीत-काव्य को धार और ऊर्जा प्रदान करने वाले कवियों में उनका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

गीत-काव्य की अनन्य साधिका शांति सुमन की सरलता, सहजता और शालीनता उनके व्यक्तित्व के आभूषण हैं। इनका सीधा प्रभाव उनकी रचनाओं पर भी पड़ा है। यही कारण है कि इनकी रचनाओं की भाषा सीधी, सरल और आडम्बरहीन है। डॉ० शांति सुमन की रचनाओं में मिथिलांचल के गांवों की मिट्टी की सुगन्ध और उसकी पहचान देखते ही बनती है। इनके गीतों में ग्रामीण जीवन के दुःख-सुख, जीवन-शैली और जीवन-संघर्ष की स्पष्ट झलक मिलती है। आम आदमी की पीड़ा, व्यथा और संवेदना को कोमल शब्दों में गूंथने और उसे अपने गीतों में सजाने की अदभुत कला शांति सुमन में है।

शांति सुमन की रचनाओं में एक ओर जहाँ नये-नये अनछुये बिम्ब, भावनाओं की ताजगी और कल्पनाओं की कोमलता दिखलाई देती है, वहीं दूसरी ओर समसामयिक समस्याओं पर गहरे चिंतन का प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। सचमुच शांति सुमन लोक संवेदनाओं की शिखर कवयित्री हैं। शायद इसीलिए समीक्षकों ने इन्हें बिहार की महादेवी के रूप में महिमामंडित किया है। शांति सुमन जैसी धीर, गंभीर और मानवतावादी श्रेष्ठ कवयित्री का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

जन्म :–

शान्ति सुमन के पहले गीत-संग्रह 'ओ प्रतीक्षित' के आधार पर उनकी जन्मतिथि 15 सितम्बर 1942 है। उसके बाद उनके जितने भी संग्रह आये सबमें उसी तिथि को छापने की विवशता रही। एक तो दूसरे संग्रह में उसको सुधारा नहीं गया और दूसरे गीतकार की ओर से उसका कोई संशोधन भी नहीं हुआ। पता नहीं 'ओ प्रतीक्षित' में कैसे 1944 को 1942 पढ़ लिया गया अथवा प्रूफ को सावधानी से देखा नहीं गया।

शान्ति सुमन आजीविका से हिन्दी-विभाग की प्रोफेसर रही हैं। उनके विद्यालय और महाविद्यालय दोनों के प्रमाणपत्रों में उनकी जन्मतिथि 15 सितम्बर 1944 है। सेवानिवृत्ति भी उनकी इसी तिथि से हुई है। यह एक असुविधा तो इस्वी सन् के साथ है। दूसरी असुविधा इनके जन्मदिन के साथ भी है। इनके काका मदन मोहन लाल जो बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजग थे, ने शान्ति सुमन का जन्मदिन शरत पूर्णिमा लिखा दिया था। इनकी सभी कृतियों पर जन्म के साथ शरत पूर्णिमा को ही लिखा गया। बाद में इनकी फुआ इस तिथि से असहमत हो गईं। उन्होंने बताया कि 'मदन का अपना जन्म शरत पूर्णिमा को हुआ, इसलिये उसने तुम्हारा जन्मदिन भी उसको ही लिखा गया। उसको तुम्हारे जन्म का सही अनुमान नहीं रहा। असल तो यह है कि तुम्हारा जन्म अनन्त चतुर्दशी को हुआ था। सब ने घर में अनंत के डोरे बांधे थे। मेरे सिवा तुम्हारे जन्म का साक्षी कौन होगा कि तुम्हारे जन्मते ही मैंने तुमको गोद में उठा लिया था। मुझको अनन्त का डोरा खूब याद है।'

शान्ति सुमन को थोड़ा कैसा अनुभव होता है कि फुआ ने पहले बता दिया होता तो यह अन्तर नहीं होता। वस्तुतः फुआ को कहने का अवसर नहीं मिला। उनको पता नहीं था कि इनके आवेदन पर काका ने जन्मतिथि में क्या भरा है। और यह पता तो एकदम नहीं चला कि उनकी भतीजी कविता लिखने लगी है। उसके संग्रह भी छपकर आने लगे हैं। कभी इस संबंध में बात होती तो सबकुछ स्पष्ट हो जाता।

इस घटना के पीछे एक बहुत बड़ा कारण है जिसको इससे विलग नहीं किया जा सकता। गांव में स्कूल नहीं होने के कारण समीप के गांव के स्कूल से इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा दी थी। शान्ति जी ने बताया कि फार्म उनके काका ने भरा था। इन्होंने सिर्फ हस्ताक्षर किया था। तब यह बोध कहाँ था कि हस्ताक्षर करते हुए पूरा फार्म पढ़ लिया जाए। पढ़ भी लेतीं तो शरत पूर्णिमा अनन्त चतुर्दशी नहीं हो सकती थी, क्योंकि काका ने जो लिखा था, वही तय था। जैसा कि शान्ति जी ने बताया कि काका तो केवल सूचना देते थे, असल काम तो श्याम काका (संबंध के काका) करते थे जिनका नाम सिद्धेश्वर मल्लिक था, जो गणपतगंज हाई स्कूल, सहर्षा के हेडमास्टर थे। इस पूरी आवाजाही में शान्ति सुमन का जन्मदिन आसपास की तिथियों में भटक गया। लिखने को अब भी ये शरत पूर्णिमा ही लिखती हैं, पर आत्मा में अनन्त चतुर्दशी कौंध जाती है। श्रेय जिसको मिलना था, नहीं मिला। शान्ति सुमन कहती हैं – 'यदि मैंने जीवन में कुछ अच्छा किया है तो उसका श्रेय अनन्त चतुर्दशी को ही जाता है क्योंकि शरत पूर्णिमा जैसा कोमल-मसृण जीवन मुझको मिला ही नहीं, अनन्त चतुर्दशी का श्रम-सौन्दर्य ही हाथ लगा है।'

शिक्षा :–

शान्ति सुमन की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में अपने घर पर ही प्रारंभ हुई। गाँव में घोर गरीबी और अशिक्षा का अंधकार था। इनके पिता ही गाँव के सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। इनके दालान पर ही बाँस के फट्ठों से बनी बेंच वाला स्कूल था। वह स्कूल घर के बच्चों के साथ टोले के अन्य बच्चों के पढ़ने-लिखने के लिए ही बना था। पहले उसमें कुछ दिन लाला बाबा भी पढ़ाते थे जिनके डर से घर और टोले के बच्चे थर-थर काँपते रहते थे। थोड़ी सी गलती होने पर वे बच्चों को कान पकड़कर उठा लेते थे। शान्ति सुमन पढ़ने में तेज थीं। वे पढ़नेवाले बच्चों के लिए आदर्श थीं। अपने साथियों की वे खूब सहायता करती थीं। उस पर ये अपनी दादी की आँखों का तारा थीं। दादी के कारण इनसे कोई गलती हो भी जाये तो कोई इनको डाँट नहीं सकता था। इस दबदबा का एक बहुत बड़ा कारण था। यह कारण इनके जन्म से संबंध रखता है।

शान्ति सुमन के पहले इनकी माँ ने एक पुत्र को जन्म दिया था। उन दिनों धन-धान्य से भरा हुआ घर और उस पर इनके पिता की डिफेन्स में नौकरी। पैसे और ग्राम्योचित सुविधाओं की कमी नहीं थी। गरीबों और अशिक्षितों से भरे हुए उस गाँव में इनका घर ही 'मालिक' का घर था क्योंकि गाँव में सबसे अधिक जमीन इनके घर को ही थी। शान्ति सुमन के पहले माँ ने जिस पुत्र को जन्म दिया था, छठी के उस हर्षातिरेक भरे वातावरण के बाद उसका देहान्त हो गया। दो-तीन वर्षों तक फिर इनकी माँ को कोई संतान नहीं हुई। तीन वर्षों के बाद जब इनका जन्म हुआ तो घर में जैसे खुशियों की बाढ़ आ गई। एक तो बेटी होने के कारण माँ का कोख बदल गया था। गाँव में मान्यता थी कि पहले बेटा हुआ और नहीं रहा तो कोख बदल जाने यानी बेटी होने से शुभ होता है। इनकी दादी को लगता था कि ये भी नहीं बचेंगी, सो वे छोटी बच्ची शांति सुमन को लेकर कहाँ-कहाँ मन्नतें मांगने के लिए नहीं गई। कई तीर्थों पर गई। अनेक मंदिरों-मजारों पर माथा झुकाया। गंगा जी में धान की 'जुट्टी' (टोकरी भर धान से बनी पिटारी) बहायी। शान्ति सुमन को लेकर गंगा की लहरों में डुबकियाँ लगाईं। कहीं छागल तो कहीं कोहरे का बलिदान किया। जहाँ-जहाँ जो कबूल किया, सबको पूरा किया। अन्ततः उनका एक स्वस्थ-प्रसन्न बच्ची के रूप में विकास होना शुरू हुआ। कहना अप्रासंगिक नहीं है कि इन घटनाओं के पीछे गाँव में जड़ीभूत अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ ही हैं जिनमें तत्कालीन ग्राम्य जीवन डूबा हुआ था।

क्योंकि शान्ति सुमन बड़े यतन से पाली-पोसी गई और इनके बाद माँ को एक-एक कर तीन बेटे हुए, इसलिये घर में इनका कुछ अधिक ही स्नेह-सम्मान

था। स्कूल में पढ़ते हुए इसलिये मास्टर भी इनको कुछ नहीं कहते थे। कभी-कभी तो गलतियाँ ये करती थीं, डाँट दूसरे बच्चे सुनते थे, मार भी दूसरे को ही पड़ती थी। दादी की छत्रछाया में इनको अभय प्राप्त था।

एक बार उसी बाँस की बेंच वाले स्कूल में श्याम सुन्दर मिश्र मास्टर बनकर आये। वे बहुत दिन रहे भी। वे शान्ति सुमन के पारिवारिक पुरोहित के बेटे थे। वे एक शर्ट पहनकर आते थे जिसके लिए सौ बार बोल चुके थे कि वह जलपाईगुड़ी में सिला है। इसमें दो ही जोड़ हैं। वह अपने बड़े भाई से मिलने वहाँ गये थे। इधर ऐसा शर्ट नहीं सिल सकता। शान्ति सुमन ने एक दिन अपने साथियों से कहा कि देखना आज भी श्याम सुन्दर मास्टर वही बात बोलेंगे और सारे बच्चे हँसने लगे थे। जब मास्टर क्लास में आये तो इन्होंने बच्चों की ओर देखा और सब हँसने लगे। हँसीं ये भी, पर मास्टर साहब ने इनको कुछ नहीं कहा और सभी बच्चों को डाँटा ही नहीं, सजा भी दी।

और इस तरह चौथे से छठे वर्ग तक की पढ़ाई इन्होंने चेतमणि मिड्ल स्कूल सुखपुर से की। सातवें वर्ग की पढ़ाई इन्होंने गांधी विद्यालय राजपुर से की जो अब मधेपुरा जिला में है। अपनी फुआ के पास रहकर इन्होंने इस वर्ग की पढ़ाई पूरी की। फिर अपने गाँव आ गईं और मैट्रिक तक की पढ़ाई हाई स्कूल सुखपुर से पूरी की। स्कूल 'कन्फर्म' नहीं था, इसलिए इन्होंने विलियम मल्टीपरपस हाईस्कूल सुपौल से मैट्रिक की परीक्षा प्राइवेट केन्डीडेट के रूप में दी और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुईं।

आगे की पढ़ाई करने के लिए गाँव में कोई प्रावधान नहीं था। साधारण किसान परिवार में जन्म लेने के कारण असुविधायें तो थीं ही, रूढ़ियों के बंधन भी बहुत कड़े थे। गाँव में एक तो लड़कियों की शिक्षा का ही चलन नहीं था, दूसरे गाँव से शहर भेजकर लड़कियों को पढ़ाना तो असंभव कल्पना के सिवा कुछ नहीं था। सो पारिवारिक सहमति से इनकी उच्च शिक्षा के लिए इनका विवाह 25 फरवरी 1959 को संपन्न हुआ। उस परिवार में भी इनकी उच्च शिक्षा के प्रति सद्भाव था। इसलिए उसी वर्ष मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज में इनका नामांकन हुआ। इनके एक जेठ श्री यशोधर लाल दास उन दिनों स्थानान्तरित होकर मुजफ्फरपुर में रह रहे थे। उनका परिवार भी साथ रहता था। इसलिए उनलोगों के साथ रहकर ही इन्होंने प्री यूनिवर्सिटी (उन दिनों शिक्षा में नये प्रयोग के कारण प्रथम वर्ष को प्री यूनिवर्सिटी कहा जाता था) की पढ़ाई शुरू की। कुछ महीनों के बाद इनके जेठ पुनः स्थानान्तरित होकर कटिहार चले गये। अब घर की जिम्मेदारी और पढ़ाई दोनों का निर्वाह इनको स्वयं करना पड़ा। यह निर्वाह उस स्थिति में करना पड़ा जब अपने पिता के घर में इन्होंने चूल्हा/स्टोव जलाना भी नहीं जाना था। तब गैस चूल्हा नहीं होता

था। होता भी होगा तो इनके पास नहीं था। ये यह भी नहीं जानती थीं कि रोटी कैसे बेली जाती है, भात कितना उबलने पर पूरा पक जाता है। अस्तु, वे बड़े कठिन दिन थे। उस कठिन दिन को, उस अंधकार को पार करने के लिए मजबूत संकल्प और कड़े संघर्ष की अपेक्षा थी। शान्ति सुमन ने इनको अपने अंदर जुटाया। एक बार बच्चा काका (श्री मदन मोहन लाल) आये तो इन्होंने इनका संघर्ष देखा। उनके कहने पर ही एक विशेष वरदान जैसी बात हुई कि पिता ने इनकी दादी को यहाँ इनके पास पहुँचा दिया। दादी क्या आई, इनको जिन्दगी मिल गई। अब न घर के काम और न कॉलेज जाने की चिन्ता। अब दूसरी तरह का संघर्ष था। प्री यूनिवसिटी परीक्षा देने तक ये अपने पुत्र अरविन्द की माँ बनीं। प्री यूनिवसिटी में इनको प्रथम श्रेणी मिली तो इनका और पूरे घर का हौसला बढ़ गया। फिर पार्ट वन और हिन्दी ऑनर्स की परीक्षा पास की। एम० ए० की परीक्षा भी इन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। संघर्ष यहाँ भी था। एक छात्र जिसका विवाह उसी वर्ष तत्कालीन पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) की भगिनी से हुआ था, उसको उसका मूल्य मिलना था। दो या तीन पत्रों में 'बोर्डकेस' के द्वारा 2 अंक उसको शान्ति सुमन से अधिक दिया गया। वैसे हल्ला होता रहा था कि यही टॉप कर रही हैं। दृश्य कुछ दूसरा हो गया। अर्थात् दो ही छात्रों को उस वर्ष हिन्दी में प्रथम श्रेणी मिली थी। सो शान्ति सुमन प्रथम श्रेणी में दूसरे स्थान पर रहीं।

इसके बाद इन्होंने पीएच०-डी० की। यहाँ भी एक कथानक बना। उन दिनों विभाग में अध्यक्ष पद को लेकर जबर्दस्त तनातनी चल रही थी। जो अध्यक्ष थे, उनके जूनियर एक प्राध्यापक ने अपने अध्यक्ष होने का दावा किया था और कमीशन में जाने के पहले दोनों युद्धस्तर पर तैयार हो रहे थे। शान्ति सुमन उन दिनों शहर की कवि-गोष्ठियों में जाने लगी थीं। वहीं एक दिन भावी विभागाध्यक्ष ने उनको अपने अधीन पीएच०-डी० करने का दबाव दिया। उन्होंने पीएच०-डी० का आवेदन-पत्र भी इनको पहुँचा दिया। उसी समय सभासीन अध्यक्ष को इस बात की भनक लगी। उन्होंने यह दिलासा देना शुरू किया कि वे अध्यक्ष हैं। वे प्राध्यापक की नियुक्ति में उनकी मदद कर सकते हैं जिसकी रिक्ति अब निकलने ही वाली है। मगर उन्होंने इनको अपने अधीन नहीं, एम० डी० डी० एम० कॉलेज में नियुक्त एक प्राध्यापिका के अधीन रजिस्ट्रेशन कराने का जोर दिया था। प्राध्यापक बनने की पुरजोर लालसा ने इनको उनकी ही बात मान लेने पर विवश किया। इस प्रकार 1971 में इनको पीएच०-डी० की उपाधि से अलंकृत किया गया। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष (हिन्दी) डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय और कलकत्ता यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० कल्याणमल लोढा इनके शोध-ग्रंथ के परीक्षक थे और डॉ० वार्ष्णेय अंतर्वीक्षा में आये थे।

आजीविका :–

यहाँ भी एक अन्तर्कथा चलती है। यह कुछ अधिक ही थकाने वाली है। 1965 ई० में शान्ति सुमन ने एम० ए० पास किया। 1966 में महन्त दर्शनदास महिला कॉलेज के हिन्दी-विभाग में एक प्राध्यापिका के अध्ययनावकाश में जाने से एक पद रिक्त हुआ। उसका विज्ञापन आया और इन्होंने अपने को प्रत्याशी के रूप में प्रस्तुत किया। फिर तो वह नाटक हुआ जिसकी थोड़ी चर्चा ऊपर में आई है। तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष ने कहा – नियुक्त होना है तो पहले अमुक प्राध्यापिका के अधीन पीएच०-डी० के लिए रजिस्टर्ड हो जाइये। विषय आपके ऊपर है, जो भी लेना चाहें। बहुत अंतर्वाह्य संघर्ष के बाद इन्होंने उस प्राध्यापिका को निदेशिका के रूप में स्वीकार कर लिया। इनको अनुभव हो गया था कि सारी डिग्रियाँ, प्रतिभा और कुशलता के बाद भी आजीविका आसान नहीं होगी यदि उस शर्त्त को नहीं माना। इन्टरव्यू में ही शांति सुमन ने देख लिया था कि डिग्री और मेधा में ये सबसे आगे थीं। इनका होना तय था, किन्तु उस शर्त्त की तलवार माथे पर लटक रही थी। परिजनों ने सुझाव दिया कि निदेशक से क्या होता है, काम तो स्वयं करना होता है। वास्तविकता यह सामने आई कि निदेशक की इच्छित विधा कविता थी ही नहीं और इनके शोध का विषय था – 'मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य।'

30 सितम्बर 1966 को महन्त दर्शनदास महिला महाविद्यालय में नियुक्त होकर शान्ति सुमन स्थिर नहीं हुईं। जिस 'स्त्रीपन' से हमेशा इनको विरोध रहा, उसी जंजाल में फँस गईं। विभाग क्या, कॉलेज में कहीं भी तेजस्विता नहीं थी और उसी निष्प्रभ वातावरण में रहना था। कॉलेज गेट से अन्दर जाते हुए एक बेचैनी उनके पीछे चल देती थी जिसको कॉलेज से घर लौटते हुए वे वहीं छोड़कर चली आती थीं। इनके पास न पैरवी थी, न पैसे। सो आजीविका ने इनको बड़े-बड़े दुख दिये। दो या तीन बार इनकी सेवा अस्थायी होने के कारण समाप्त हो गई। दो बार कमीशन से भी निष्फल वापस आईं। तीसरी बार जब लोकसेवा आयोग में साक्षात्कार के लिए गईं तो प्रायः चमत्कार ही हुआ। यदि कोई ईश्वर है/था तो उस समय तक वह मनुष्य में रूपान्तरित हो गया था। उस साक्षात्कार में जो हिन्दी के विशेषज्ञ आये थे, वे इटावा कॉलेज के प्रोफेसर थे। यह बात शान्ति सुमन ने साक्षात्कार के समय ही संकेत से जाना था। ये अपने सारे प्रमाणपत्रों, अनुशंसाओं, प्रकाशित कविताओं की कतरनें और कुछ रचनायें पत्रिकाओं के साथ ही लेकर साक्षात्कार में उपस्थित हुईं। साक्षात्कार का वह समय भी बेहद थका देने वाला था। लगभग सोलह-सत्रह प्रत्याशियों के बाद इनको बुलाया गया था। तत्कालीन विभागाध्यक्ष की मंशा को विशेषज्ञ ने भाँप लिया था। वे शीघ्रता में प्रश्न पूछने की फिराक में शान्ति सुमन के

प्रमाणपत्रों, अनुशंसाओं और रचनाओं को अनदेखा करनेवाले थे। किन्तु विशेषज्ञ ने मेधा और अनुभव का कोई तेज इनके चेहरे पर देखा और देखा उस धैर्य और आत्मविश्वास को भी जो इनके उत्तर में लगातार ध्वनित हो रहे थे। उन्होंने शान्ति सुमन के सारे प्रमाण पत्र आदि को इनका फाइल स्वयं खोलकर देखा और पहले तो तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष की ओर मुखातिब हुए और कहा – आपके यहाँ ऐसे प्रतिभाशाली और निपुण अभ्यर्थियों को नियुक्ति नहीं मिलती है। और फिर शान्ति सुमन की ओर देखकर कहा – आपने तो बहुत कुछ लिखा है, लिख रही हैं। मैं आपके लेखन से परिचित हूँ। फिर उन्होंने कहा – आप कभी इटावा गईं हैं ? इन्होंने तपाक से उत्तर दिया कि वे तीन बार इटावा कवि-सम्मेलन में गई हैं। उन मंचों के नाम भी बताये जहाँ गई थीं। विशेषज्ञ ने दुख व्यक्त किया कि इनके जैसे प्रत्याशियों की आजीविका सुनिश्चित नहीं होती है। संयोग ही था कि शान्ति सुमन ने अपने हौसले में आकर कह दिया था कि वे तीसरी बार कमीशन आई हैं। फिर किसी बात पर उनका जवाब था कि 'आप जैसों का नहीं होगा तो किसका होगा ?'

साक्षात्कार समाप्त कर वे अपने पति के साथ होटल लौट आई थीं। बहुत देर तक उनको अपने वे प्रमाण-पत्र, अनुशंसाएँ और रचनाएँ दिख ही नहीं रही थीं। दिख रहा था तो अपने हिन्दी विभागाध्यक्ष का चेहरा, उनकी आँखें। शान्ति सुमन को लगता रहा कि उनके विभागाध्यक्ष कुछ अधिक ही कुपित हो गये होंगे। अगली सुबह वे हनुमान मंदिर गईं। पटना स्टेशन का हनुमान मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। मन इतना संशयों, द्वन्द्वों और अनिर्णयों से भरा हुआ था कि किसी पवित्र स्थल पर जाकर ही उन तनावों से मुक्त हुआ जा सकता था। लोगों की भीड़ जिनमें इनके जैसे ही कितने ही होंगे जिनको देखकर शान्ति सुमन का मन हल्का हो आया था।

कई महीनों के बाद विश्वविद्यालय में नियुक्ति की सूचना आई। नियुक्ति पत्र पर पहला ही नाम शान्ति सुमन का था। इनसे बीस वर्षों से भी अधिक सीनियर एक प्राध्यापक का नाम दूसरा था। इनके अतिरिक्त तीन और व्याख्याताओं की नियुक्ति हुई थी। शान्ति सुमन ने महन्त दर्शनदास महिला कॉलेज में ही रहना उचित समझा क्योंकि उसी के बगलवाले मुहल्ले में वे रहती थीं। कॉलेज के कारण ही आमगोला छोड़कर मिठनपुरा आ गई थीं। अब तो वहीं इनका घर है। जुलाई '72 से सितम्बर 2004 तक इनकी सेवा निरन्तर बनी रही। सितम्बर 2004 में ये सेवामुक्त हुईं। ये चाहतीं तो किसी अन्य कॉलेज भी जा सकती थीं, जैसे लंगट सिंह कॉलेज, जहाँ उन्होंने पढ़ाई की थी, पर आवास की सुविधा के कारण वे महन्त दर्शन दास महिला कॉलेज में ही रहीं।

एक बात कहने से छूट रही है। उसको लिखे बिना आजीविका-कांड

समाप्त भी नहीं होगा। ऊपर यह चर्चा आई है कि अस्थायी होने की वजह से तीन बार अन्य सहकर्मियों के साथ इनकी सेवा समाप्त हो गई थी। सहकर्मियों में जो लोग चतुर थे, जिनकी पैरवियाँ थीं, विशेषकर राजनीतिज्ञों से जिनका मेल-जोल था, उनमें से कई की सेवा का अन्तराल (गैप) समंजित हो गया था। एक का पति एम० एल० ए० हुआ तो वैसा हुआ, एक स्वयं नेता था। शान्ति सुमन ने अन्य सहकर्मियों की तरह कई बार विश्वविद्यालय को लिखा, पर उन पर कोई सुनवाई नहीं हुई। एक और जो दुखद है कि शान्ति सुमन को विश्वविद्यालय ने पीएच०-डी० भत्ता नहीं दिया। उनका जवाब था कि आपने नियुक्ति के बाद पीएच०-डी० की होतीं तो एलावेन्स मिलता। विश्वविद्यालय के इस नियम पर सिर्फ चकित हुआ जा सकता था। आजीविका की अवधि में कॉलेज ने जितने फायदे इनसे लिये, उनकी तुलना में इनको बहुत ही कम दिया। शान्ति सुमन ने बताया कि जब वे कॉलेज में अस्थायी थीं, उन्हीं दिनों बेहद चतुर और जूनियर से अधिक से अधिक काम लेने वाली व्यवस्था ने इनसे बहुत काम लिये। कॉलेज में हिन्दी-विभाग तो पुराने समय से था, पर अब तक सारे काम-काज अंग्रेजी में हो रहे थे। नामांकन के लिए आवेदन पत्र, बस-प्रपत्र, विवरणिका आदि सभी अंग्रेजी में थे। शान्ति सुमन ने सबके हिन्दी अनुवाद किये। वे कठिन कार्य थे और कई-कई दिनों तक चार-चार पीरियड वर्ग लेने के बाद भी रुक कर उन कामों को करना पड़ा था। शान्ति सुमन ने इसको अपनी कार्यकुशलता तथा मेधा का प्रतिफलन ही माना था। दूसरों से व्यवस्था ने यह कार्य इसलिए नहीं कराया होगा कि वे इस कार्य को कर ही नहीं सकती थीं।

घर-परिवार :–

शान्ति सुमन के पिता का नाम श्री भवनन्दन लाल दास है जिनको लोग कुँवर जी कहकर पुकारते थे। अब वे संत का जीवन जीते हैं और 'कुँवर बाबा' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये अनंतश्री विभूषित श्री महर्षि मेंही परमहंस के शिष्य हैं। इनका अपना शिष्य समुदाय है जो उत्तर बिहार के सहर्षा, मधेपुरा, पूर्णिया, अररिया, किशनगंज आदि, उधर नेपाल की तराई के क्षेत्रों, उत्तर प्रदेश के हरिद्वार, ऋषिकेश, लखनऊ आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त दिल्ली और कलकत्ता में भी फैला हुआ है।

इनके पिता हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी के बहुत निपुण ज्ञाता हैं। उन्होंने महर्षि मेंही के प्रवचनों और पदावलियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। सत्संग-शिविरों में उनकी वक्तृता, प्रवचन-प्रियता एवं धर्म-अध्यात्म के प्रति उनकी प्रतिबद्धता विशेष रूप से स्मरणीय है। वे पहले डिफेन्स में थे, बाद में अंग्रेजों की उस नौकरी को छोड़कर कृषि-कार्य में लगे और फिर उन्होंने

विद्यालयों में अंग्रेजी का अध्यापन किया। अब वे पूर्णरूपेण संत हैं।

शान्ति सुमन की माँ का नाम जीवनलता देवी था। 1986 के 30 नवम्बर को उनका देहान्त हुआ। वे रूप-गुण और स्वभाव से बड़ी पवित्र स्त्री थीं। अभावों में रहकर भी उन्होंने कभी किसी की शिकायत नहीं की। संत बनने के पूर्व पिता ने अपने मालिकाना पुरुष-स्वभाव में कभी उनको अनदेखा भी किया तो माँ ने सदैव अपने शील-संयम और पारिवारिक निष्ठा को आगे रखा।

शान्ति सुमन को छः भाई और दो बहनें हैं। भाई-बहनों में शान्ति सुमन सबसे बड़ी हैं। सभी भाई-बहनों में सबसे अधिक प्यार इनको ही मिला। विशेषकर दादी तो इनको अपनी आँखों की रोशनी समझती थीं। बचपन से लेकर कुछ अन्तरालों को छोड़कर इनकी पूरी पढ़ाई में दादी इनके साथ रहीं। ये कहती हैं कि दादी के बिना मैं कुछ नहीं कर सकती थी – न पढ़ाई, न गृहस्थी, न बच्चों का पालन-पोषण। दादी का अभयदान और आशीर्वाद ने ही मूलतः इनको रचा है। माँ से अधिक दादी का संग-साथ इनके जीवन की अमूल्य निधि है।

विवाह के बाद जैसा होता है अपना गाँव कासीमपुर छूटता गया जिसको बड़े प्यार से किसी को पत्र लिखते अपने पते में देती थीं – ग्राम-कासीमपुर, पत्रालय-डुमरा, जिला-सहर्षा (उत्तर बिहार)।

तब जिला पूर्णिया ही था जिसके एक गाँव भद्रेश्वर के एक परिवार से इनका संबंध जुड़ा। इनके श्वसुर का नाम जयकृष्ण लाल दास और सास का नाम फाल्गुनी देवी था। इनके चार पुत्र और दो पुत्रियों में शान्ति सुमन के पति सबसे छोटे हैं। उन दिनों विवाह एक सामाजिक समस्या बना हुआ था। एक निम्न मध्यवर्गीय किसान परिवार के लिए दहेज की राशि जुटाना बहुत कष्टकर था, विशेषकर सूखा और बाढ़ में फसल के नष्ट हो जाने के बाद और कमरतोड़ महँगाई के कारण। गाँव में ऐसे भी पैसे बहुत कम होते थे। शादी-ब्याह के लिए बड़ी पूँजी जुटाने में खेत ही काम आता था। उन दिनों खेत भी बिकना आसान नहीं था। एक तो लोगों के पास पैसे बहुत कम होते थे और दूसरा कि खेत बहुत सस्ता में बिकता था, उसकी बहुत कम कीमत मिलती थी।

शान्ति सुमन का जब विवाह हुआ तब इनके परिवार का बंटवारा नहीं हुआ था। सबने मिलकर यह तय किया था कि इस पीढ़ी का यह पहला विवाह है। इस विवाह के सम्पन्न होने पर ही बंटवारा होगा। शान्ति सुमन को याद आता है कि घर से बहुत कुछ मिला था, फिर भी कुछ जमीन बिकी थी।

शान्ति सुमन के पति का नाम श्री जागेश्वर लाल दास है। इनकी पढ़ाई खत्म हुई थी और ये रेल-डाक-सेवा में नियुक्त हुए थे। नियुक्ति के एक-डेढ़

वर्षों के बाद इनका विवाह हुआ। यह परिवार भी निम्न मध्यवर्गीय परिवार ही था/है, किन्तु इनके पिता के घर में जहाँ सब कुछ खेती पर ही निर्भर था, यहाँ सभी नौकरीपेशा थे। भद्रेश्वर से बहुत समीप है फारबीसगंज जहाँ बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए एक 'वासा' ले लिया गया था। वहाँ पति के मंझले भाई का परिवार रहता था और घर के कुछ बच्चे भी वहीं रहकर पढ़ते थे। गाँव में खेती-बारी थी और भगवती का 'गहबर' भी था। यह सब अब भी है।

शान्ति सुमन ने उच्च शिक्षा मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज से ग्रहण की। शिक्षा समाप्त कर इनको आजीविका भी यहीं के कॉलेज में मिली। अतएव 1959-60 में मुजफ्फरपुर आकर ये यहीं की होकर रह गईं। 33 वर्षों तक प्राध्यापन किया और यहाँ इनका सामाजिक सरोकार बेहद घना हुआ।

शान्ति सुमन का एक पुत्र है – अरविन्द जिसका घर का नाम मुकुल है। अरविन्द बचपन से ही बहुत मेधावी रहा। उसने प्रभात तारा विद्यालय, मुजफ्फरपुर से अंग्रेजी माध्यम से सेवेन्थ स्टैण्डर्ड तक की परीक्षायें पास कीं। उसका रैंक हमेशा प्रथम रहा। फिर वह गोथल्स मेमोरियल स्कूल कर्सियांग (प० बंगाल) से 'सीनियर कैम्ब्रिज' तक की परीक्षा पासकर आई० आई० टी० की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और आई० आई० टी०, कानपुर से उसने सिविल इंजीनियरिंग की डिग्री ली। उसका कैरियर बहुत अधिक शानदार रहा। शान्ति सुमन उसको आगे भी पढ़ने देना चाहती थीं, पर कदाचित् माता-पिता के संघर्ष को देखकर उसने आजीविका में ही आने का मन बनाया। कैम्पस सेलेक्शन में वह सात स्थानों पर सेलेक्ट हुआ था, पर माँ के मना करने पर वह मानता रहा, ज्वाइनिंग छोड़ता रहा। अंततः जहाँ सबसे बाद में ज्वाइन करना था, टिस्को, जमशेदपुर में उसने ज्वाइन कर लिया। 25 फरवरी 1987 को उसका विवाह हुआ। उसकी पत्नी टाटा मेन हॉस्पिटल में स्त्री रोग विशेषज्ञ है। उनका नाम डॉ० विशाखा वर्मा है। रूप-गुणों में अद्वितीय वधू पाकर शान्ति सुमन की खुशियों को पंख लग गये थे। विशेषकर इनकी कलात्मक अभिरुचियाँ शान्ति सुमन को बेहद भायी थीं। इनको इन्होंने अपने घर की नयी सम्पदा के रूप में पाया। इनको अनुभव हुआ कि इनके बहुत वर्षों से जुगाये गये स्वप्न सार्थक हो उठे हैं। शान्ति सुमन बताती हैं कि बहू के आगमन पर उन्होंने एक गीत की रचना की थी जो इस प्रकार है –

सपनों ने साँसें लीं
घर यह घर की तरह हुआ
हीरे-मानिक से क्या कम हैं
तेरे लिये दुआ

पीले गुंथे कनेर संग
लहरे हों केश तुम्हारे
माथे की बिन्दी में जगमग
दिपते कई सितारे
तेरे आते ही तो घर यह
परब–तिहार हुआ

नहीं जान पाओगी अपने
होने के तुम माने
कितने–कितने सपनों में तुम
रची रही सिरहाने
केवल दीवारें थीं घर में
अब संसार हुआ

आँखें ही दीखी थीं केवल
और नहीं कुछ भी
कोमलता का वह अभिलेख
कहाँ था कैसा भी
तुम्हारे आने से यह घर
पूरा परिवार हुआ।

शान्ति सुमन को एक पौत्री – शालीना और एक पौत्र – ईशान है। शालीना अभी बी० आई० टी०, मेसरा में कम्प्यूटर साइंस के द्वितीय वर्ष में है और ईशान प्लस टू का छात्र है।

शान्ति सुमन की एक पुत्री है – चेतना वर्मा। वह भी बचपन से ही मेधावी है। प्रभात तारा विद्यालय से उसने भी प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर वह एम० डी० डी० एम० कॉलेज, मुजफ्फरपुर से इन्टरमीडिएट की परीक्षा में प्रथम आई। उसने इन्द्रप्रस्थ कॉलेज फॉर वूमन (दिल्ली विश्वविद्यालय) से इतिहास प्रतिष्ठा की परीक्षा पास की। एक वर्ष किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली में पढ़ने के बाद वह मुजफ्फरपुर चली आई और आधुनिक इतिहास (मॉडर्न हिस्ट्री) में एम० ए० की परीक्षा बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण हुई। उसने NET की परीक्षा पास कर पीएच०-डी की है और अंशकालीन रिसर्च एसोसिएट के रूप में यू० जी० सी० के वित्त सहाय्य पर 'हिन्दी पोएट्री एण्ड इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल : रिसोर्स मैटेरियल' विषय पर पोस्ट डॉक्टरल शोध-प्रबंध लिखा है।

शान्ति सुमन के जामाता का नाम सुशान्त वर्मा था। वे यांत्रिक अभियंता थे।

वैज्ञानिक रूचियों के साथ-साथ वे अत्यंत सृजनशील थे। उन्होंने 'किलमेन्स टेक्नोलॉजी' का निर्माण किया था। पुरुषोचित दर्प से भरा उनका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था। चेतना के जीवन में उनके आने के बाद शान्ति सुमन को लगा कि अब उनका परिवार का आत्मीय सुखद स्वप्न पूरा हुआ है, पर 2003 के 13 सितम्बर को सुशांत ने अंतिम सांसें लीं। इस जन्म में ही कितने जन्मों के दुख शान्ति सुमन ने जी लिये। बेटी की अधूरी जिन्दगी इनको पल-पल बेचैन करती है। इस यातना को चेतना रचनात्मक बना रही है, ऐसा ये मानती हैं। वह यातना का रचनात्मक मूल्य जान गयी है।

चेतना वर्मा समकालीन हिन्दी कविता की एक समर्थ युवा कवयित्री है। उसका एक साझा कविता-संकलन 'सप्त स्वर' के अतिरिक्त एकल कविता-संग्रह 'उस दिन का इन्तजार' भी प्रकाशित है और वह लगातार पत्र-पत्रिकाओं में लिख रही है। अभी वह के० एम० पी० एम0 कॉलेज, जमशेदपुर में इतिहास-विभाग में कार्यरत है। इसके दो बच्चे हैं – पुत्र – अपूर्व और पुत्री – श्रेयसी। इन बच्चों के पिता सुशान्त वर्मा अब नहीं रहे। तब अपूर्व वर्ग – 5 और श्रेयसी जिसको यशी कहकर बुलाते हैं वर्ग-2 में थी। शान्ति सुमन की आँखें बरसने लगती हैं जब वे कहती हैं कि जीवन में आज तक जो खुशियाँ मिली हैं सब पर यह दुख भारी है। बेटी की सूनी माँग को देखना किसी माँ के दुर्भाग्य का चरम है। फिर भी बेटी के दुखों और संघर्षों की रचनात्मक परिणति देखना शान्ति सुमन को आश्वस्ति देता है।

महाविद्यालय से सेवामुक्ति के बाद शान्ति सुमन अब मुजफ्फरपुर की अपेक्षा 36 ऑफिसर्स फ्लैट, जमशेदपुर में अपने परिवार के साथ अधिक रहती हैं, किन्तु मुजफ्फरपुर का अपना घर इनको कभी नहीं भूलता। अपना कर्मक्षेत्र-रचनाक्षेत्र तो ये मुजफ्फरपुर को ही मानती हैं। मीठनपुरा के इस घर 'ईशान' को इनके सुख-दुख, हर्ष-विषाद सबका साक्षी होने का श्रेय प्राप्त है। जीवन के जो अनुभव इन्होंने जिये हैं, उनमें बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास, दादी-नानी होना इनके लिए केवल संबंधों का अनुष्ठान नहीं, केवल समय का निशान नहीं, उनकी आयु के अनुभवों के जीवन-वर्ष हैं।

कृतियाँ :–

आठवें वर्ग से ही शान्ति सुमन ने कवितायें लिखना शुरू कर दिया था। उनके गाँव कासीमपुर की बगल का गाँव बाराही में मिडिल स्कूल और पुस्तकालय भी था। घर के लोग वहीं के पुस्तकालय से किताबें लाकर पढ़ते थे। शान्ति सुमन ने उसी दौर से किताबों को पढ़ने में रूचि ली। दसवें वर्ग तक आते-आते इन्होंने जयशंकर प्रसाद के 'आंसू', 'पंत का पल्लव' और महादेवी

के कितने ही गीत-संग्रहों को पढ़ लिया था। जैसा कि ये बताती हैं – महादेवी के गीतों का प्रभाव इनपर अधिक पड़ा। उन गीतों का पूरा का पूरा अर्थ इनकी समझ से परे था, फिर भी गीत इनको इतने भाते थे कि वे एक-एक गीत को कई-कई बार पढ़ती थीं। निराला के गीत 'भारति जय-विजय करे' और 'भिक्षुक' कविता ने इनके बाल मन को बहुत आलोड़ित किया था। 'आंसू' के दुखान्त भावों ने इनके हृदय को अधिक छुआ और महादेवी के गीतों में व्यक्त रहस्य और विरह भाव को इन्होंने आत्मसात् कर लिया। फल यह हुआ कि बिना प्रेम के ये बिरह गीत लिखने लगीं। जो जी में आया वह इतना लिखा कि दो-तीन गीतों के संग्रह पुस्तकों के रूप में तैयार कर लिये थे। उसमें भूमिका और समर्पण का पृष्ठ भी रखा था। जैसा इन्होंने उन कवियों के गीत-संग्रहों को देखा, उनकी तरह का सब कुछ कर लिया। मैट्रिक में जब पढ़ रही थीं तो पढ़ी गयी पुस्तकों के आधार पर जाने कितने वीर स्त्रीपात्रों पर केन्द्रित नाटिका भी लिखी थी। कई एकांकी भी। इन्होंने इनको इतना संभालकर रखा था कि '60 में जब कविता-गीत समझने लगी थीं, तब उनको देखा तो वे उतने ही ताजा रूप में निकलीं। शान्ति सुमन बताती हैं कि उनको देखकर पहले तो हँसी आई, फिर अपनी समझ का कच्चापन भी समझ में आया। अपनी बाल-बुद्धि पर इनको कोई पश्चाताप या दुख का भाव नहीं था, वरन् अपनी मिहनत और रख-रखाव पर तरस आया। किसी को दिखाने में अब संकोच होता था। बहुत वर्षों तक वे वैसे रखे रहे। बाद में धीरे–धीरे एक-एक को नष्ट कर दिया।

शान्ति सुमन बताती हैं कि अब जिस बात का बहुत अफसोस है वह है उसी तरह लिखे गये एक उपन्यास को फाड़ देना। अब ये सोचती हैं कि उसको फ़ाड़ना नहीं चाहिये था। अब उसको पढ़ना सुखद हो सकता था। अपनी बाल अनुभूतियों को जानना, उससे गुजरना सचमुच एक अनुभव होता। पर समझदार मन को वह सब ग्राह्य नहीं हुआ। इनको याद आता है कि संभवतः उसका शीर्षक 'प्यार की झलक' था। अपने शीर्षक की वह शुरूआत अबके इनके अनुभवों से अलग थी। इनको वह भावुकता पसंद नहीं आई थी क्योंकि वर्तमान जीवन-क्रम, संदेवनाओं और रचना-दृष्टि से वह बेहद अलग और अस्वाभाविक लगी थी।

त्रिवेणीगंज (सहर्षा अब जिला – सुपौल) से श्री तारानन्दन तरूण से सम्पादित पत्रिका 'रश्मि' में शान्ति सुमन की पहली गीत-रचना छपी अर्थात् जिन रचनाओं को इन्होंने प्रकाशित और सार्वजनिक करना चाहा, उसकी शुरूआत यहीं से हुई। उसके बाद लंगट सिंह कॉलेज पत्रिका 'वैशाली' में इनका गीत छपा और इसके द्वारा ये कॉलेज के छात्रों और प्राध्यापकों की दृष्टि में आईं। उसके बाद कई पत्रिकायें थीं – समाज-कल्याण, नारी चेतना आदि

दसों पत्रिकाओं में इनके गीत छपे। अब तो सबके नाम भी याद नहीं हैं। हुआ यह कि एक बार ये कॉलेज में पढ़ते हुए कुछ छात्राओं के साथ तत्कालीन प्राचार्य श्री महेन्द्र प्रताप जी से मिलने उनके घर गईं। प्राचार्य यह बात जानते थे कि ये कविता लिखती हैं। ये अपनी कुछ कवितायें – जो उस समय तक छपी थीं, पत्रिका सहित ही ले गई थीं। प्राचार्य ने उनको यह कहकर रख लिया कि वे इनको पढ़कर बाद में अपना विचार देंगे। इनको उनकी यह सहानुभूति अच्छी लगी, पर विडम्बना यह हुई कि प्राचार्य ने उन रचनाओं को नहीं लौटाया। वे कौन-सी रचनायें थीं, अब तो एकदम स्मरण में नहीं हैं।

शान्ति सुमन इस घटना को रचना-प्रसंग ही मानती हैं जब महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित कवि-सम्मेलन में उन्होंने एक गीत की सस्वर प्रस्तुति की थी। उस समारोह में पटना आकाशवाणी केन्द्र के तत्कालीन निदेशक श्री सुमन वात्स्यायन भी पधारे थे। शान्ति सुमन की गीत-प्रस्तुति से वे इतने प्रभावित हुए कि कार्यक्रम की समाप्ति पर उन्होंने इनको बुलाया और बड़ी ममता दिखाई। वे इनके स्वर और रचना के भावों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इनकी साधारणता देखी और कहा कि आप बहुत अच्छा लिखती हैं, गाती हैं, आपकी प्रस्तुति में प्रभाविता भी है। मैं चाहता हूँ कि आप आकाशवाणी पटना आकर ऑडीशन दें। आपको वहाँ से प्रोग्राम के लिए अनुबंधित किया जाएगा। इससे आपकी कला भी निखरेगी, प्रसारित होगी तथा आपको आर्थिक आय भी होगी।

शान्ति सुमन अपने पति के साथ पटना गईं। तब मुजफ्फरपुर से पटना जाना इतना आसान नहीं था कि बस में बैठे और पटना पहुंच गये। उस समय रेलगाड़ी से मुजफ्फरपुर से सोनपुर होते पहलेजा घाट जाना पड़ता था, वहाँ से स्टीमर से महेन्द्रू अथवा प्राइवेट स्टीमर रहा तो बाँसघाट उतरना पड़ता था। फिर वहाँ से रिक्शा से गन्तव्य तक जाना पड़ता था। इनके पति का भी उन दिनों बहुत पटना आना-जाना नहीं था। सो, कैसे वहाँ पहुंचकर क्या-क्या हुआ इसका ये बहुत रोचक संस्मरण-अनुभव सुनाती हैं।

शान्ति सुमन उस दिन आकाशवाणी ठीक समय से पहुँचीं। उन्हें रिकार्डिंग रूम ले जाया गया। इसके पहले उन्होंने शीत-ताप नियंत्रित कक्ष नहीं देखा था। सो विस्मय के साथ खुशी भी थी, पर इनको विस्मय तब हुआ जब वहाँ माइक्रोफोन के पास एक-एक कर तीन व्यक्तियों को देखा – एक के आगे हारमोनियम, एक के हाथ में बाँसुरी और एक सारंगी जैसा कोई वाद्य रखे हुए था। मगर इन्होंने किसी से कुछ पूछा नहीं और आश्चर्य तो यह है कि उन तीनों ने इनको पहले से संगीत का अनुभव प्राप्त ऑडीशन देनेवाली मान लिया। सो उनलोगों ने तीन बार अपने वाद्य को समवेत रूप से बजाकर इनकी ओर

देखा। ये तो विस्मय से भरी बैठी थीं कि यह क्या हो रहा है। गीत (कविता) की प्रस्तुति में ये वाद्य क्यों बजाये जा रहे हैं। जब उनलोगों को यह भान हुआ कि ये कुछ नहीं समझ रही हैं तो उन लोगों ने शीशे के पारवाले रिकार्डिंग रूम को देखा। तीन जोड़ी आँखें शीशे के पार से झाँक रही थीं। इनको कुछ संकेत भी देना चाहती थीं, पर ये तो उठकर खड़ी हो गईं। लगभग बाहर हो जाना चाह रही थीं कि तभी माइक्रोफोन के कनेक्शन को काट दिया गया। सब लोग इस रूम में चले आये और इनको समझाना शुरू किया कि हम तो सुगम संगीत के लिए आपका ऑडीशन लेने आये थे, आप क्यों तैयार नहीं हुईं ? तभी एक आदेशपाल आकर कह गया कि आपको डायरेक्टर साहब बुला रहे हैं। अपने को सुस्थिर कर वे वहाँ गईं। उन्होंने इनको बहुत समझाया – एकदम पिता की तरह कि वे चाहते हैं कि वे सुगम संगीत का ऑडीशन दें। कविता-पाठ में पारिश्रमिक बहुत नहीं है। सुगम संगीत में कविता-पाठ की अपेक्षा तीन गुना अधिक राशि मिलती है। वस्तुतः वे इनका आर्थिक आधार मजबूत करना चाहते थे। इनकी रचना के लिए उनके मन में बहुत स्नेह था – आदर की हद तक। पर वे उसके साथ उनकी पारिश्रमिक की राशि भी अधिक चाहते थे। उन्होंने अपनी समझ से बहुत कहा कि आप अकेली नहीं आ पातीं यहाँ। सो, दो व्यक्तियों का आना-जाना, आपका समय, पढ़ाई छोड़कर आना, फिर आपके पति का भी अवकाश लेकर आना – इनकी तुलना में कविता-पाठ का पारिश्रमिक बहुत कम है। पर इन्होंने उनकी बातों को स्वीकार नहीं किया और कहा कि वे स र ग म नहीं जानतीं, फिर संगीत में कैसे स्वर मिला सकती हैं। इस पर उन्होंने यह भी कहा कि संगीतकार स्वयं आपकी संगत करेगा। आपको कुछ नहीं करना है। पर इनके विचार के आगे वे झुक गये। कविता के प्रति इनका रूझान देखकर कहा – 'बेटी आपके विचार से अब मैं सहमत हूँ।' इस प्रकार विन्ध्यवासिनी देवी, कुमुद अखौरी आदि का नाम लेकर इनको समझाने वाले वात्स्यायन जी इनके मुँह से निराला, महादेवी, नागार्जुन, बच्चन, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, उमाकांत मालवीय, नीरज आदि की काव्य प्रस्तुति के यश और जनता से उनके जुड़ाव की बात सुनकर धीरे-धीरे हंसने लगे। फिर तो आकाशवाणी में '60 से जो कार्यक्रम मिलना शुरू हुआ तो '90 तक नियमित रूप से मिलता रहा। गीत-संग्रह छपने के पूर्व ही आकाशवाणी के प्रसारण से ये बहुप्रचारित और चर्चित हो गई थीं। किसलय, पल्लव आदि से लेकर भारती और चौपाल तक में इनके कार्यक्रम होते थे। मैं जानता हूँ कि 'मेघ इन्द्रनील' (मैथिली गीत-संग्रह) जो पहले सामा-चकेवा प्रकाशन, बम्बई से छपा और बाद में अभिधा प्रकाशन से, के पाँच प्रतिशत को छोड़कर सभी गीत भारती और चौपाल कार्यक्रम में प्रसारित हो चुके थे।

आकाशवाणी केन्द्रों में वे पटना, लखनऊ, राँची, गोरखपुर, इलाहाबाद, जम्मू-कश्मीर, रींवा, उदयपुर, कलकत्ता, दिल्ली आदि देश के अनेक केन्द्रों से कवितायें पढ़ चुकी हैं। दूरदर्शन से भी मुजफ्फरपुर, पटना, राँची, गोरखपुर, लखनऊ, जम्मू-कश्मीर, कलकत्ता, दिल्ली, जालंधर आदि अनेक प्रतिष्ठानों से इनकी कवितायें प्रसारित हुई हैं। श्रीनगर (कश्मीर) के दूरदर्शन केन्द्र में तत्कालीन केन्द्र निदेशक ल्हासाकौल (जिनकी बाद में उग्रवादियों ने हत्या कर दी) के चेम्बर में केसर की चाय का स्वाद आज तक नहीं भूला है।

प्रकाशन :–

शान्ति सुमन चाहती थीं कि इनका पहला गीत-संग्रह दिल्ली से प्रकाशित हो। किन्तु इसके लिए कोई सूत्र नहीं मिल सका। ये दिल्ली जा नहीं सकती थीं और कोई दिल्ली में प्रकाशन की व्यवस्था करनेवाला नहीं मिला। इसलिए कवि-सम्मेलन के मंचों पर जाने के कारण इलाहाबाद के कुछ प्रकाशकों का पता चला। उनमें से एक ओंकार शरद ने जो मुजफ्फरपुर के बेनीपुरी परिवार से घनिष्ठ संबंध रखते थे और जो शान्ति सुमन के गीतों से पूर्व परिचित थे, क्योंकि इलाहाबाद के कवि-सम्मेलनों में ये कई बार कविता पढ़ चुकी थीं और इन्होंने वहीं उनके गीतों को सुना था और उनके प्रशंसक भी थे, ने शान्ति सुमन का पहला गीत संग्रह 'ओ प्रतीक्षित' 1970 में अपने लहर प्रकाशन, 2 मिन्टो रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित किया। इनका यह गीत-संग्रह तब प्रकाशित हुआ जब दो-चार नवगीतकारों के संग्रह ही प्रकाशित हुए थे। इसलिए भी उसका एक ऐतिहासिक महत्व है और यह भी सच है कि उस समय दूसरी स्त्री नवगीतकार भी उभरकर सामने नहीं आई थी। इसलिए उमाकांत मालवीय ने शान्ति सुमन को 'नवगीत की एकमात्र कवयित्री' कहा। इस संग्रह के गीतों में प्रेम-सौन्दर्य तो है ही, जीवन, समय और समाज के भी यथार्थ खुलकर आये हैं। एक चित्र देखें –

औंधे कजरौटे सा आसमान
फटे आँचल सी नदी
पथराये बरगद के नैन
ठहरी सी कोई सदी
मौसम ने फेंके पाँसे
मछली छपी–छपी
कबूतर के पंखों पर ठहरी भोर

यह एक चित्र भी संवेदनाओं से भरा है –

क्रोशिया काढे दिन बीते अब तो चूल्हे–चौके की बात

शान्ति सुमन का दूसरा नवगीत-संग्रह 'परछाईं टूटती' का प्रकाशन बीज प्रकाशन, पटना से 1978 ई० में हुआ। इस संग्रह में इनके नवगीतों का श्रेष्ठ व्यक्त हुआ है। इसमें मध्यवर्गीय आदमी की तकलीफों – उसका ज़ीवन-यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। नवगीत की अगली संभावनाओं को व्यक्त करने वाले सारे संकेत और तत्त्व इन गीतों में भरे हुए हैं। सौन्दर्यपूर्ण सान्द्र बिम्बों के कारण ये गीत अधिक चर्चित हुए और सराहे गये। नवगीतों के पूरे इतिहास में ऐसे बिम्ब नहीं आये जैसे शान्ति सुमन के इस संग्रह में रचे गये हैं। कुछ आलोचकों ने तो बिम्बों की रचना के लिए ही इस संग्रह को अप्रतिम माना है और कहा है कि ये बिम्ब शान्ति सुमन ही रच सकती हैं। इनके बिम्बों को देखकर ही उनके गीतों की पहचान हो जाती है। एक दो चित्र द्रष्टव्य हैं –

जब कभी कोई बच्ची वर्षा में नहाती है,
घर की याद आती है

और

काठ के सपने शहर आये।
देखते जैसे कि डर आये।

यह एक चित्र भी –

कहीं–कहीं दुखती है
घर की छोटी आमदनी
धुआँ पहनते चौके
बुनते केवल नागफनी
मिट्टी के प्याले सी दरकी
उमर हुई गुमनाम

इसके बाद **'सुलगते पसीने'** – 1979 और **'पसीने के रिश्ते'** 1980 का प्रकाशन बीज प्रकाशन पटना से ही हुआ। दोनों ही संग्रहों में श्रमजीवी-संघर्षरत जन के श्रम-सौन्दर्य के शिल्प में ढले हुए जनवादी गीत हैं। इन गीतों में शोषित-पीड़ित जन के संघर्ष का आह्वान किया गया है। इन गीतों में फूल है, चिड़िया है तो किसानों-मजदूरों की भूख से ऐंठती अंतरियाँ और कमजोर पसलियाँ भी हैं। ये गीत शान्ति सुमन के आगामी जनवादी गीतों के पूर्व ज्वलित संकेत तो हैं ही, आम आदमी के जीवन-यथार्थ की मजबूत पकड़ भी इन गीतों में है।

'मौसम हुआ कबीर' 1985 में प्रभा प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। बाद में उसका दूसरा संस्करण 1999 में ईशान प्रकाशन मुजफ्फरपुर से छपा। यह गीत-संग्रह शान्ति सुमन का प्रतिनिधि जनवादी गीतों का संग्रह है। शोषित-पीड़ित जन की तकलीफें ही इन गीतों में नहीं हैं, इनमें शोषकों के विरूद्ध आवाज भी उठाई गई है। 'सुलगते पसीने' में एक सशक्त जनवादी

गीतकार के रूप में जो इनकी पहचान बनी, इस संग्रह के गीतों के द्वारा उस पर समर्थ मुहर लगी है। इन गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है कि ये गीत शोषण-दमन के विरूद्ध साहस और संकल्प देते हैं। जनता के बीच जाकर इन गीतों ने उनकी स्वीकृति प्राप्त की है। ये गीत जनता के श्रम-संघर्ष से इतने जुड़े हैं, फिर भी इनमें मानवीय संवेदना के स्रोत प्रवाहित हैं और ये सामाजिक सरोकार से गहरे जुड़े हैं। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

सूर्य को लपेटे हुए अपने बदन से
हौसले तैयार, बाँधे सर कफन से
मुक्ति की शुभकामना ले
जागता है एक जोड़ा हाथ

कुछ पंक्तियाँ ये भी –

सूखी रोटी के दुख/हमने बरस जिये
तन का फटा अंगोछा/शीत न घाम सहे
बहो हवा हे झिर–झिर/तनिक अरज कर लें
अबके उपज सोनमाटी/परब सब दुख हर लें

पत्रिका में छपकर मंचों पर जनता के समूह को आन्दोलित और संवेदनात्मक धार देने वाला यह गीत द्रष्टव्य है –

थाली उतनी की उतनी ही/छोटी हो गई रोटी
कहती बूढ़ी दादी मेरे गाँव की
फेन–फूल से उठे मगर राखों के ढेर हुए
कसी हुई मुट्ठी के किस्से हम मुठभेड़ हुए
भूख हुई अजगर सी सूखी तन की बोटी–बोटी
कहती बड़की काकी मेरे गाँव की

इनका यह गीत 'बेटा मांगे चन्द्रमा' की लोकप्रियता का ग्राफ अभी भी उतरा नहीं, ज्यों का त्यों है –

फटी हुई गंजी ना पहने, खाये बासी भात ना
बेटा मेरा रोये, मांगे एक पूरा चन्द्रमा
घट्ठे पड़े हुए हाथों का/प्यार बड़ा ही सच्चा
खोज रहा अपनी बस्ती में/दूध नहाया बच्चा
बाप सरीखा उसको आता/नहीं भूख को टालना

'तप रहे कँचनार' 1997 में प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह साझा गीत संकलन है, पर इसमें संकलित गीत नवगीत की जीवनधर्मी संवेदनाओं के अधिक निकट हैं। कोमल-सुन्दर-ताजे बिम्बों वाले ये गीत शान्ति सुमन की

विलक्षण गीतधर्मिता को व्यंजित करते हैं। ये नएपन के लिए ही केवल नहीं लिखे गये हैं, अपितु इनमें गीत की नयी रचना-दृष्टि भी समाहित है।

2002 ई० में शान्ति सुमन का अलग गीत-संग्रह **'भीतर-भीतर आग'** का प्रकाशन हुआ। यह गीत-संग्रह कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इन गीतों को पढ़कर ही राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि – ''डॉ० शान्ति सुमन नवगीत की अनन्या कवयित्री एवं समकालीन लेखन की प्रणेत्री हैं। वे नवगीत और जनवादी गीत की मुख्यधारा में दूर तक स्वीकृत, समादृत उच्च स्तरीय रचनाकार हैं।'' 'ओ प्रतीक्षित', 'परछाईं टूटती', 'मौसम हुआ कबीर' के गीतों की तरह इस संग्रह के गीतों ने पत्रिकाओं में तो अपनी जगह बनाई ही, कवि-सम्मेलन के मंचों पर भी बहुत ख्याति और लोकप्रियता अर्जित की। पाठकों और श्रोताओं को जाने इनके कितने ही गीत कंठस्थ हैं। इनके कितने ही गीतों ने प्रथित पूर्वागत समकालीन गीतों का आस्वाद तक बदल डाला है –

दरवाजे का आम–आँवला घर का तुलसी–चौरा
इसीलिये अम्मा ने अपना गाँव नहीं छोड़ा

एक दो पंक्तियाँ और देखिये –

एक प्यार सबकुछ होता है/जिससे डरते हैं सारे डर

और

पीली लहठियों वाले हाथ/रात–दिन सपने बुनते हैं

एक यह और भी –

अब उड़ान ने भाषा पहनी है चिड़िया की पाँखों में

और यह भी –

अपनी बेटी सी कोमल हरियाली/सामने किलकती खड़ी

'2004 में पंख-पंख आसमान' नाम से शान्ति सुमन के एक सौ एक गीतों का प्रतिनिधि संकलन नचिकेता द्वारा चयनित और संपादित होकर आया। इसमें नवगीत और जनवादी दोनों प्रकार के गीत हैं। इसमें अब तक के इनके सभी संकलनों से गीत लिये गये हैं। इनके गीतों के संदर्भ में डॉ० रेवतीरमण ने कहा – ''शान्ति सुमन राग और रूप ही लिखती रहीं, विराग और अरूप ने कभी उन्हें आकर्षित नहीं किया तो उसके पीछे उनकी गतिशील यथार्थ की समझ और विकासशील वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि है।'' उन्होंने आगे कहा है कि ''बहरहाल मैं मानता हूँ कि शान्ति सुमन के भीतर गीत की संवेदना निश्छल है, अमिश्रित है। उनके भावावेश अलंकृत नहीं, स्वभावजन्य हैं। वे गीत रचने और उनकी सम्यक प्रस्तुति के लिए ही बनी हैं। संभव है, जन-आंदोलनों का पीछा करने की प्रेरणा उन्हें उद्दाम युग-चेतना से मिली हो।''

समीक्षकों-आलोचकों ने शान्ति सुमन के गीतों को नागार्जुन के गीतों के समीप रखकर देखा है। डॉ० रेवती रमण इनके गीतों में उन सभी उपकरणों को देखते हैं जो नागार्जुन की कविता में समाविष्ट हैं।

'एक सूर्य रोटी पर' 2006 में प्रकाशित हुआ। 'मौसम हुआ कबीर' के बाद यह शान्ति सुमन का जनवादी गीतों का एक प्रतिनिधि संग्रह है। पाठकों और समीक्षकों के द्वारा चर्चित एवं प्रशंसित इन गीतों ने समकालीन जनवादी गीत-साहित्य में अपनी सार्थक उपस्थिति बनाई है और जनवादी गीत-साहित्य के इतिहास में अपने पृष्ठ सुरक्षित किये हैं। इसमें 'गीत में बदलाव के संकेत' शीर्षक से इन्होंने गीत पर कुछ बातें कही हैं जिन पर ध्यान जाता है। इन्होंने लिखा है – 'जनवादी गीतकार की पहचान इसलिये अपने समय, समाज और वर्ग के जरूरी सवालों से जुड़नेवाले जुझारू मित्र के रूप में है। वह अपने संवेदनशील समाज की आँख और हृदय है। वह अपने समाज के यथार्थ के ताप को अनुभव करने वाला जागरूक पहरूआ भी है। ये गीतकार दुनिया में श्रमजीवी-संघर्षरत जन के लिए लड़ने की आग जलाये रखते हैं। यहीं से उनके गीतों में प्रामाणिक ऊर्जा आई है। सहज मानवीय करुणा के अभाव को गीतकार आज सामान्य जन की पीड़ा लिखकर पाट रहे हैं। गीतों ने लेखन को निष्करुण होने से बचाया है।'

शान्ति सुमन ने इस गीत-संग्रह में जो एक महत्वपूर्ण बात लिखी है उसका जनवादी गीत-रचना में विशेष ध्यान रखना जरूरी है – ''समाज में सक्रिय परिवर्तनकामी शक्तियों के साथ गीतों के जुड़ने की बात जब होती है तो कविता के इतिहास के पिछले पन्नों को भी पलटने की बात सामने आती है। गीतों में प्रगतिवाद का पुनरागमन हो और उसकी वही परिणाम भी हो तो यही अच्छा है कि गीत अपनी बुनियादी विरासत से जुड़ा रहकर अपने सामाजिक और सामयिक सरोकारों को अधिक तेज करे और आवश्यक होने पर समय का अतिक्रमण भी कर जाये। जानलेवा व्यवस्था का मर्सिया पढ़ने से कोई फायदा नहीं। इसे बदलने की आकांक्षा रखनेवाली सक्रिय ऐतिहासिक शक्तियों का साथ देना ही उचित है।''

शान्ति सुमन के उपर्युक्त विचारों ने जनवादी गीत में सोच की एक नई रेखा खींची है। श्रमजीवी जन के जीवन के साधारण प्रेम को ये किस तरह असाधारण बना देती हैं –

लगभग संग हुई कुछ बातें / नमक और चीनी दिन-रातें
सुजनी, गाँती ढेर अंगोछे / सर्द पूस हम मिल-जुल काटें
फसलों वाले प्यार / फाड़ देते मन की काई

एक और चित्र जो बार-बार पढ़ने और गुनने योग्य है –

सात किलो राई–सरसों/और आठ किलो सुतली
चमकी कच्ची चाँदी की/बिछिया–टीका–हँसुली
ऊपर हँसे चन्द्रमा नीचे लहरी है नदिया

संघर्ष-श्रमरत जीवन में स्त्रियों की एक विशेष भूमिका होती है, उसका एक खास महत्त्व होता है। पुरुष और स्त्री साथ मिलकर श्रम करते हैं, सुख-दुख सहते हैं और कठिन से कठिन तकलीफ को भी दोनों एक दूसरे के सहारे पार करते हैं। यह देखने की बात है कि खेत में हल पुरुष चलाता है, कोड़ता, चौकियाता भी है, पर धनरोपनी अधिकांशतः स्त्रियाँ ही करती हैं। फसल से खर-पतवार निकालना या निकौनी करना हो तो स्त्रियाँ करती हैं, भले फसल की सिंचाई पुरुष करते हैं। उन कामों में भी स्त्रियाँ उनका बहुत साथ देती हैं। शान्ति सुमन ने ऐसी संघर्षजीवी श्रम करती स्त्रियों का चित्र खींचते हुए सौन्दर्य के सारे आकर्षण अपने शब्दों में रख लिये हैं –

देह साँवली चकमक पहने बूँद पसीने की
परब–तिहारों पर भी/तन पर वही पुरानी साड़ी
जंगल–झरने, पेड़–पहाड़ों पर लगती है भारी
आधी झुकती डालों वाली कली नगीने की

इस श्रम करने वाली स्त्री का चित्रण भी शान्ति सुमन ने इतना डूबकर किया है कि उसका जीवन यथार्थ आँखों के आगे खड़ा हो जाता है –

फूलों का मौसम होंठों पर/ओसों का टीका माथे पर
खेतों की माटी में खूब/नहाई लगती हो

श्रम करने से भी जब मेहनतकश की इच्छायें अधूरी रहती हैं, उनके घर-बार अधूरे रहते हैं तब उनके जीवन का यही रूप, यही दशा और यही चित्र सामने आता है –

मिहनत और मजूरी करके/दिन कट जाते थे
दूर–दूर रहने के ये घाटे पट जाते थे
अब तो आँखों में पानी के दिये जलाये हैं....
हंसी, नींद, सपने सब कुछ कितने घबड़ाये हैं

इस संग्रह के गीतों पर अपना विचार देते हुए डॉ० विजेन्द्र नारायण सिंह ने लिखा है कि "विकसनशील संवेदनशीलता की गीतकर्त्री हैं शान्ति सुमन। नवगीत के नगरबोध और आधुनिक बोध की यात्रा से गुजरते हुए वे बीसवीं सदी के सातवें दशक के उत्तरार्द्ध में किसान और मजदूरों के श्रम और संघर्ष को अपने गीतों में ढालने लगीं और जनवादी गीत की संवेदना से एकाकार हो गईं।

पूँजीवादी व्यवस्था की प्रत्येक अमानुषिकता को वे छन्द और लय में ढालकर क्रांतिकारी चेतना की वाहिका बन सकी हैं। आरंभिक जनवादी गीतों की नारेबाजी से शीघ्र ही निकलकर 'एक सूर्य रोटी पर' जैसे श्रेष्ठ कालजयी गीत की रचना वे कर जाती हैं।''

शान्ति सुमन के गीतों की जो मौलिक विशेषता है वह यह कि ''हर प्रकार के दुख, हर प्रकार के दर्द, हर तरह के अभाव इन गीतों की भाषा और लय में ढलकर मधुरतम बन गये हैं। यही गीतकर्त्री की रचनात्मकता है।''

इस क्रम में कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह का विचार भी अत्यंत प्रासंगिक लगता है जब वे शान्ति सुमन के इस गीत 'हम मुठभेड़ हुए' की विवेचना करते हुए लिखते हैं –

'भाव, विचार और भाषा की रवानगी इन तीनों को लेकर यह गीत भी अपने हल्कों में काफी सराहा गया है। शुरू से लेकर अंत तक एक विशेष लय यहाँ भी बंधी चलती है।... कला शोर नहीं है, न ही केवल उबाल और उद्‌गार है, वह बल्कि उसे एक विशिष्ट अर्थ और पहचान देकर मनुष्य को हमबद्ध सहभागिता की ओर अग्रसर करने की सबसे विश्वसनीय प्रक्रिया है। शान्ति सुमन के एक गीत की पंक्तियाँ लें –

थाली उतनी की उतनी ही/छोटी हो गयी रोटी
कहती बूढ़ी दादी अपने गाँव की
सबसे बूढ़ी दादी अपने गाँव की

यहाँ अनायास ही कुछ ऐसे तत्त्व आ गये हैं जिनके योग से गीत का विन्यास अपने आप पूरा हो जाता है।'

शान्ति सुमन का अबतक का नया गीत-संग्रह है – 'धूप रंगे दिन'। इसका प्रकाशन 2007 में हुआ। 'एक सूर्य रोटी पर' की अगली कड़ी के रूप में इसको देख सकते हैं। इसके गीतों में बिना किसी आक्रोश या कठोर प्रतिक्रिया के व्यवस्था के अंतर्विरोध को अपनी लयात्मक शैली में उजागर किया गया है। लहूलुहान शब्दों से क्रांति होगी, विपक्ष पर कठोर शब्दों से आक्रमण कर उनके पशुत्व को नष्ट करने के लिए अपना पशुत्व जगे – इनमें शान्ति सुमन का कोई विश्वास नहीं है। वनैले जानवरों को इकट्‌ठा कर उससे शत्रुओं की तुलना कर अपने मन की प्रतिहिंसा को आगे करने में भी शान्ति सुमन का कोई विश्वास नहीं है। ये अपनी शैली में, अपनी तरह से व्यवस्था की विसंगतियों की बातें करती हैं, उन पर प्रहार करती हैं और व्यापक श्रमजीवी वर्ग के जीवन-यथार्थ में प्रवेश करती हैं। बड़े आत्मीय और विश्वसनीय ढंग से विपन्न वर्ग की पीड़ा को चित्रित करती हैं। नर और नरेतर दोनों संसार की बातें करती हुई शान्ति

सुमन अपनी संवेदनाओं के अक्षय भण्डार खोल देती हैं। तभी आम आदमी की पीड़ायें, यातनाएँ जो इनके शब्दों में उतरती हैं, अधिक आत्मीय, विश्वसनीय और अपनी भोगी गई लगती हैं। श्रमजीवी जनों का परिवार ही नहीं, उनके दुख और संघर्ष भी अपने लगते हैं –

बिन तेरे ऐसा भी होता
हवा नहीं कुछ कहे हवा से
बाबूजी को घर की चिन्ता
माँ जुड़ जाती नई दवा से
फिर तो सब दिन महालया है।

इस तरह का एक बेहद संवेदनाओं से भरा और मन को छूता हुआ चित्र द्रष्टव्य है –

जब से देखा है माँ को/आटे सी पिसती हुई
बहन कभी तितली सी थी/अब चुभती हुई सुई
गाँव वनों–शहरों में फाँके/अपना भाई धूल

इस संग्रह के गीतों को पढ़कर सुचर्चित कवि-समीक्षक मदन कश्यप ने अपना विचार दिया है कि ''शान्ति सुमन हमारे समय के उन कुछ दुर्लभ गीतकारों में हैं, जो शिल्पगत अथवा शैलीगत अलगाव के बावजूद सोच और संवेदना के स्तर पर समकालीन कविता से गहरे जुड़े हुए हैं। उनके पास आज के यथार्थ की आन्तरिक गतिशीलता को परखने की दृष्टि भी है और उसे उद्‌घाटित करने की कला भी।''

वस्तुतः शान्ति सुमन ने उस अंतर्वस्तु को जिससे सुन्दर कविता रची जा सकती है, उसको गीत के शिल्प में ढाल दिया है। यह इनका अद्‌भुत कौशल है। इस कौशल से इन्होंने सुन्दर-संवेदनशील गीतों की रचना की है। यह भी सच है कि शान्ति सुमन ने गीतात्मक संवेदना वाले कथ्य को कविता के शिल्प में भी ढालने का काम किया है। शान्ति सुमन गीत लिखें या कविता, दोनों में गीतात्मक लय का वितान होता है।

इन गीत संग्रहों के अतिरिक्त 1991 में **'मेघ इन्द्रनील'** नाम से इनके मैथिली गीतों का संग्रह प्रकाशित हुआ। विद्यापति, जयदेव और नागार्जुन के गीतों के श्रेष्ठ उपादानों से सिक्त ये गीत मैथिली में होकर भी हिन्दी गीत की संवेदना से अलग नहीं हैं। गीत के कोमल शिल्प में ढले इनकी संवेदना, अनुभव और विचारों से भरे ये गीत भाषात्मक अंतर के बावजूद हिन्दी गीत-कविता के पड़ोस के अमूल्य स्वर हैं।

1994 में 'समय चेतावनी नहीं देता' नाम से इनका कविताओं का एक

साझा संकलन प्रकाशित हुआ। गीतात्मक लय से सिक्त ये कवितायें व्यक्ति की सीमा पार कर समष्टि में एकाकार हो जाती हैं। विद्रूप से भरे जीवन-यथार्थ इन कविताओं में कोमलता के शिल्प में ढलकर आये हैं। इन कविताओं में कवयित्री ने अपने अनुभवों के साथ अपनी कल्पना को भी अपनी रचनाशीलता को समृद्ध करने के लिए लगाया है। यह महत्वपूर्ण है कि इसमें इनकी कल्पना सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई है। इन कई उपर्युक्त संग्रहों के पूर्व 1976 में इनका **'जल झुका हिरन'** (उपन्यास) प्रकाशित हुआ। अपनी भाषा-शैली के लिए यह उपन्यास अधिक चर्चा में आया। इसमें प्रेम तो है ही, तत्कालीन युवा जीवन के संघर्ष, उनकी तकलीफें भी हैं। सबसे ऊपर वह असुविधाजनक यथार्थ है जिसमें जीने के लिए इस उपन्यास के पात्र विवश हैं। कालेज-जीवन से आगे बढ़ती हुई कथा जीवन के जलते मरूस्थल पर जाकर ठहर जाती है।

1993 में 'मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य' नामक इनकी आलोचना की पुस्तक आई जो इनके शोध प्रबंध पर आधारित थी। इसमें मध्यवर्ग के पारिभाषिक निर्धारण के साथ समय-समाज के संदर्भ में उसकी पूर्वापर व्याख्या देते हुए आधुनिक हिन्दी कविता विशेषकर नयी कवितायें जिनमें नयी कविता के अतिरिक्त अकविता, भूखी पीढ़ी, श्मशानी पीढ़ी, सूर्योदयी कविता, युयुत्सु कविता आदि और उनके प्रतिफलन का विस्तृत वर्णन किया गया है।

सम्पादन :-

शान्ति सुमन ने '63-'64 ई० में **'सर्जना'** मासिक पत्रिका का संपादन तब किया जब वे हिन्दी ऑनर्स की छात्रा थीं। इसके तीन अंक निकले। कुछ यशःकामी सहयोगियों के वैमनस्य के कारण पत्रिका को बंद करना पड़ा।

'भारतीय साहित्य' और **'कंटेम्परारी इंडियन लिटरेचर'** (अंग्रेजी में) दिल्ली से प्रकाशित दोनों पत्रिकाओं का कई वर्षों तक सह संपादन किया।

ये **'अन्यथा'** नाम से अनियतकालीन पत्रिका की सम्पादिका रहीं। यह पत्रिका नवगीत से प्रतिबद्ध थी और इसका प्रकाशन वर्ष 1971 था।

इन्होंने पटना से प्रकाशित **'बीज'** का भी सह सम्पादन किया।

शान्ति सुमन के गीत, कविता, समीक्षा आदि देश की प्रमुख पत्रिकाओं में छपती रहीं। देश के अनेक आकाशवाणी और दूरदर्शन केन्द्रों से इनके गीतों का प्रसारण होता रहा। एक गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर इन्होंने सर्वभाषा कवि-सम्मेलन (दिल्ली) में तमिल कविता का हिन्दी में अनुवाद-पाठ किया।

शान्ति सुमन एक गहरे सामाजिक यथार्थ की गीत-कवयित्री हैं। जिस गहरे सामाजिक यथार्थ के संघनन के कारण मुक्तिबोध जैसे बड़े कवियों की भाषा

की कलात्मकता क्षीण हो गई थी इसके विपरीत शान्ति सुमन की भाषा ने अपनी लय का विघटन नहीं होने दिया है और इनकी भाषा का सौष्ठव भी बना हुआ है। शान्ति सुमन की भाषा में यथार्थ के आवरण को भेदने की शक्ति है और वह उसकी भीतरी सतह को भी उजागर करती है। निश्चय ही इस कठिन कार्य में कल्पना की शक्ति का समाहार किया गया है। कहना चाहिये कि कल्पना का सृजनात्मक प्रयोग शान्ति सुमन की रचनाओं में देखा जा सकता है। इन्होंने अपनी विधात्मक प्राथमिकता के अनुकूल अपनी भाषा गढ़ी है। शान्ति सुमन की सबसे बड़ी विशेषता है इनके गीतों की अपनी भाषिक पहचान। जिस तरह इनके बिम्ब इनके ही बिम्ब हैं, इनके ही हो सकते हैं, पूरे नवगीत और जनवादी गीतों में इतने अलग बिम्बों की रचना दूसरे गीतकार ने नहीं की है, उसी तरह इनकी भाषा के अंतर्तत्त्व इनको दूसरे गीतकारों की भाषा से अलग करते हैं और इनको निजी पहचान देते हैं। समकालीन यथार्थ के लगातार पड़ते हुए दुष्प्रभावों एवं दबावों से शान्ति सुमन ने अपनी भाषा को बचाया है। यह उसी तरह बची है जिस तरह इस घोर अनिश्चय और अनिर्णय के इस संघाती समय में भी मनुष्यता बची हुई है, भाई-चारा बचा है और अपना कहने लायक कुछ संबंध भी बचे हुए हैं। गीत को गीत की तरह बचाकर रखना और उससे भी अधिक गीत के लिए समय-समाज से जुड़ा रहना शान्ति सुमन की रचनात्मकता की अद्वितीय पहचान है।

अंत में नवगीत और जनवादी गीतों के संसार में शान्ति सुमन की अकेली पहचान है कि ये जितना सुन्दर रचती हैं, उतना ही सुन्दर गीतों को सस्वर प्रस्तुत भी करती हैं। पहले की बात छोड़ भी दें तो '67 से लेकर '90 तक इन्होंने कवि-सम्मेलन के मंचों पर अपनी गीत-प्रस्तुति से अजस्र यश प्राप्त किया। कितने ही कवि-सम्मेलन एवं कवि-गोष्ठियाँ इनकी उपस्थिति से ही चलती थीं। ऐसे पचास से अधिक संस्मरण हैं जिनमें मंचों पर कई प्रतिष्ठित कवि-गीतकारों की उपस्थिति में श्रोताओं ने शांति सुमन को इतने धैर्य से सुना कि उस कोलाहल में मंच के नीचे केवल देखती हुई आँखें, सुनते हुए कान और चलती हुई साँसें थीं। सुदूर गाँवों में भी जाकर इन्होंने गीतों को सुनाया। शांति सुमन का यह विशेष अनुभव है कि शिक्षित समझदार श्रोताओं की तरह उनके गीतों को गांव की जनता ने भी अधिक मनोयोग से सुना, इनकी तारीफ की और संवेदना से भरे हुए स्थलों पर उनकी आँखें भी भींगी। वे भींगती आँखें शांति सुमन के लिए बेशकीमती पुरस्कार हुआ करती थीं। आज भी इनको बड़े काव्य-मंचों से अलग पुआल के ढेर पर बैठकर गीतों को सुनाना याद है। श्रोताओं की उस आत्मीयता से ये अपने को आज भी भरी-पूरी महसूस करती हैं। निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जीने वाली शांति सुमन के लिए श्रोताओं-पाठकों का यह स्नेह ही अमूल्य

धन है। इस पूरे अनुष्ठान में ये अपनी दादी के अमूल्य आशीर्वाद, अपने माता-पिता की ममता और पूरे परिवार के आत्मीय संस्पर्श को भी रचा-बसा पाती हैं।

पुरस्कार :–

शान्ति सुमन को सबसे पहले मुजफ्फरपुर से प्रकाशित पत्र 'भिक्षुक' के द्वारा सम्मान-पत्र मिला। वह सम्मान यद्यपि अपने शहर से प्राप्त हुआ था और उसका आयाम छोटा था, पर ये उस सम्मान को अपने सारे सम्मानों और पुरस्कारों से ऊपर और अलग रखती हैं। उस समाचार पत्र ने इनके सम्मानों और पुरस्कारों के द्वार खोल दिये। एक साधारण पत्र और साधारण मिट्टी की ओर से दिया गया वह सम्मान असाधारण ही नहीं, अद्‌भुत भी था। इन्होंने आज तक उस सम्मान-पत्र को जुगाकर रखा है। बाद के बड़े सम्मानों और पुरस्कारों में वह कहीं खोया नहीं है।

इसके बाद इनको बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना से **साहित्य सेवा सम्मान** से सम्मानित और पुरस्कृत किया गया। फिर तो एक के बाद एक कई सम्मान और पुरस्कार इनके लिए प्रतीक्षित और अपेक्षित भी हो गये। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से इन्होंने **कवि रत्न सम्मान** प्राप्त किया। बिहार सरकार के राजभाषा विभाग ने इनको **महादेवी वर्मा सम्मान** और पुरस्कार प्रदान किया। अवंतिका (दिल्ली) से इनको **विशिष्ट साहित्य-सम्मान** और मैथिली साहित्य परिषद् ने **विद्‌या-वाचस्पति** का सम्मान दिया। फिर हिन्दी प्रगति समिति ने **भारतेन्दु सम्मान** और नारी सशक्तीकरण के उपलक्ष्य में **सुरंगमा सम्मान** से इनको अलंकृत किया गया। इसी क्रम में विन्ध्य प्रदेश से **साहित्य मणि सम्मान** से विभूषित हुईं। 2005 में **साहित्य भारती सम्मान** से हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने इनको पुनः गौरव दिया। **सौहार्द सम्मान से 2006 में** उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के द्वारा ये सम्मानित और पुरस्कृत हुईं।

शांति सुमन जी को पत्र-पत्रिकाओं में बहुत पहले से पढ़ता आ रहा था। आकाशवाणी से भी इनकी रचनाएं प्रायः सुनने को मिलती थीं। किन्तु इनसे पहली मुलाकात जमशेदपुर में ही सातवें दशक के पूर्वाद्ध में हुई, जब शांति जी एक कवि सम्मेलन के सिलसिले में जमशेदपुर पधारी थीं। उस कवि सम्मेलन में शांति जी द्वारा गाये हुए गीत आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं –

केसर रंग रंगा मन मेरा
सुआपंखिया शाम है
बड़े प्यार से सात रंग में
लिखा तुम्हारा नाम है।

दूसरी रचना –

दुख रही है अब नदी की देह
बादल लौट आ।

मुझे याद है एक के बाद एक कई रचनाएं शांति जी ने सुनाई थीं और वह कवि सम्मेलन उनके नाम हो गया था। उसके बाद तो शांति जी लगातार कवि सम्मेलनों में जमशेदपुर आती रहीं। जमशेदपुर तथा जमशेदपुर से बाहर कई कवि सम्मेलनों में हमलोग साथ रहे। नवें दशक में तो शांति जी का जमशेदपुर से और गहरा संबंध हो गया जब सन् 82 में उनके सुपुत्र श्री अरविन्द जी टाटा स्टील में इंजीनियर के पद पर नियुक्त हो गये। उनका जमशेदपुर आना-जाना जारी रहा। शान्ति जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को बहुत निकट से जानने, समझने तथा उनकी अधिकांश रचनाओं को पढ़ने और उनके श्रीमुख से सुनने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। भाव, भाषा और अभिव्यक्ति की श्रेष्ठ कवयित्री डॉ० शांति सुमन की कालजयी रचनाएं गीत-काव्य की धरोहर हैं। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता है।

शान्ति सुमन का साहित्यिक सरोकार जितना विस्तृत है, उतना ही सामाजिक और पारिवारिक संबंध भी। मृदुभाषिता, विनम्रता और शालीनता की त्रिवेणी हैं शान्ति सुमन। अपने अपमान की तरह इनको दूसरे का अपमान भी दुखी करता है। बहुत जरूरी नहीं हो तो इनको गुस्सा करना भी नहीं आता। किसी अप्रिय व्यवहार को इस तरह सहन करती हैं कि दूसरे पर उसका प्रभाव नहीं पड़े।

मेरी यही शुभकामना है कि डॉ० शान्ति सुमन का व्यक्ति और कृति अनवरत नदी की तरह प्रवहमान रहे। इनका आगामी वह श्रेष्ठ सृजन शीघ्र कागज पर उतरे – समय, समाज और जनता को जिसकी अपेक्षा है।

1/27, काशीडीह,
जमशेदपुर - 831001
दूरभाष : 0657-2437379
मो० : 9430735262